पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द से संवेदना तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

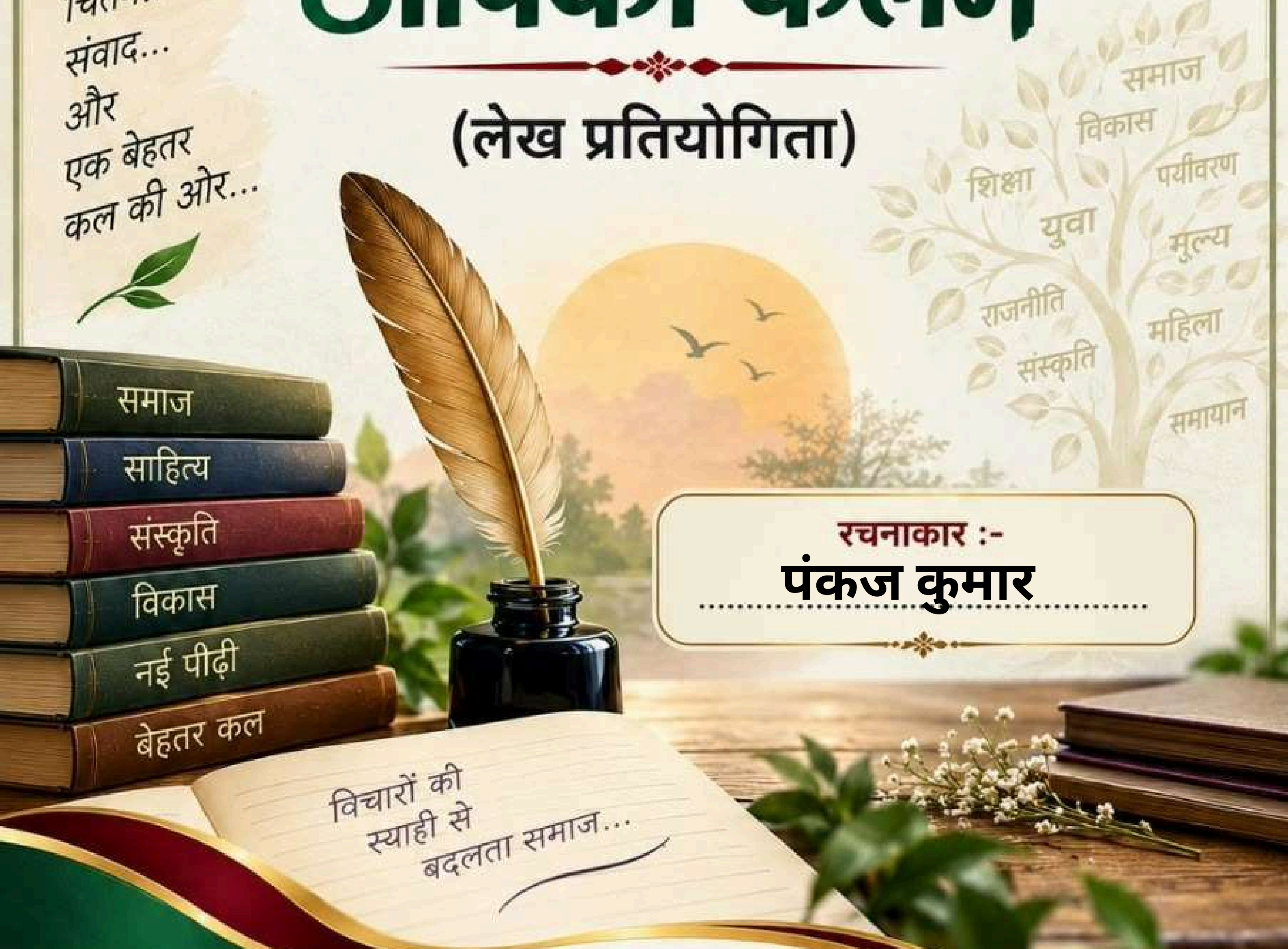

रचनाकार :-
पंकज कुमार

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था

www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक	:	डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक	:	Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय	:	15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क	:	9009423393
ईमेल	:	antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट	:	www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका **- पंकज कुमार**

नुक्कड़ का अंधेरा: नार्को-पॉलिटिकल-क्राइम नेक्सस और बर्बाद होती पर्सनल लाइफ

नुक्कड़ का अंधेरा: नार्को-पॉलिटिकल-क्राइम नेक्सस और बर्बाद होती पर्सनल लाइफ

भूमिका:
वह युद्ध जो सीमा पर नहीं लड़ा जा रहा

मानव सभ्यता के इतिहास में समाज को अंदर से खोखला करने वाले कई संकट आए हैं। कभी महामारियों ने, कभी युद्धों ने और कभी अकाल ने समाज की नींव हिलाई है। लेकिन इक्कीसवीं सदी का यह कालखंड एक ऐसे अदृश्य और घातक संकट से जूझ रहा है, जो किसी युद्ध की तरह सीमाओं पर नहीं लड़ा जा रहा, बल्कि हमारे घरों की दहलीज और मोहल्ले के नुक्कड़ों पर खेला जा रहा है।

जब हम किसी समाज की व्यक्तिगत जिंदगी या 'पर्सनल लाइफ' की बर्बादी की बात करते हैं, तो अमूमन हमारा ध्यान पारिवारिक कलह, मानसिक तनाव या आर्थिक तंगी पर जाता है। परंतु, एक खोजी नजरिया रखने वाले नागरिक के रूप में जब हम इस सड़न की गहराई में उतरते हैं, तो हमें पता चलता है कि इन तमाम व्यक्तिगत दुखों की जड़ एक बड़े, सुनियोजित और भयावह चक्रव्यूह से जुड़ी हुई है।

इस चक्रव्यूह को समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान की भाषा में 'नार्को-पॉलिटिकल-क्राइम नेक्सस' यानी नशा, राजनीति, अपराध और पुलिस तंत्र का अपवित्र गठबंधन कहा जाता है। यह कोई अमूर्त या किताबी धारणा नहीं है, बल्कि यह वह कड़वी सच्चाई है जिसे देश के हर छोटे-बड़े शहर, कस्बे और महानगर की तंग गलियों में रोज शाम ढलते सूरज के साथ सरेआम देखा जा सकता है।

अध्याय 1: गली का नुक्कड़ - जहाँ भविष्य की कब्रगाह बनती है

इस पूरे तंत्र को समझने के लिए हमें सबसे पहले उस जमीनी धरातल पर उतरना होगा जहां इस खेल के सबसे लाचार और सबसे हिंसक मोहरे तैयार किए जाते हैं। किसी भी मोहल्ले का वह कोना, जिसे स्थानीय भाषा में 'नुक्कड़' या 'अंधेरी गली' कहा जाता है, आज देश के भविष्य की कब्रगाह बन चुका है।

वहां कुछ साये मंडराते दिखाई देते हैं। इनकी उम्र पर गौर कीजिए — बमुश्किल चौदह, सोलह या बीस साल। यह वह उम्र है जिसमें युवाओं के हाथों में किताबें, खेल के उपकरण या करियर की योजनाएं होनी चाहिए थीं। लेकिन इसके उलट, उनके हाथों में एल्युमिनियम फॉयल, सिगरेट के फिल्टर, प्लास्टिक की छोटी थैलियां और सफेद या भूरे रंग का रासायनिक पाउडर होता है।

आधुनिक समय में नशे का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। अब बात शराब, गांजे या भांग जैसे पारंपरिक नशों तक सीमित नहीं रही। आज का दौर 'सिंथेटिक ड्रग्स' यानी रासायनिक नशों का है। एमडीएमए (जिसे गली की भाषा में 'एमडी' या 'मौली' कहते हैं), स्मैक (चिट्टा), मेथैम्फेटामाइन और न जाने कितने तरह के केमिकल पाउडर्स ने आज बाजार पर कब्जा कर लिया है।

ये रसायन इतने मारक हैं कि इनका महज एक या दो बार का इस्तेमाल मानव मस्तिष्क की पूरी कार्यप्रणाली को बदल देता है। पहली ही खुराक के साथ, यह नशा दिमाग के भीतर खुशियों को नियंत्रित करने वाले न्यूरोट्रांसमीटर 'डोपामाइन' का ऐसा कृत्रिम सैलाब लाता है कि इंसान को एक जादुई और भ्रमित करने वाली दुनिया का अहसास होता है। लेकिन यह अहसास चंद घंटों का मेहमान होता है। जैसे ही इस केमिकल का असर खत्म होता है, शरीर और दिमाग एक ऐसी भयानक खाई में गिरते हैं जिसे मेडिकल साइंस की भाषा में 'क्रैश' या 'विड्रॉल सिम्प्टम्स' कहा जाता है।

अध्याय 2: एक पुड़िया की कीमत - अपराध की सीढ़ी

यह नशा कोई मुफ्त की सौगात नहीं है। एमडी और स्मैक जैसे सिंथेटिक ड्रग्स की कीमतें आसमान छूती हैं। एक ग्राम शुद्ध माल की कीमत 3000 से 5000 रुपये तक होती है। अब एक बुनियादी सवाल खड़ा होता है कि जिस सोलह साल के लड़के के पास न तो कोई रोजगार है, न कोई पुश्तैनी आमदनी और न ही माता-पिता से मिलने वाली कोई मोटी पॉकेट मनी, वह रोज अपनी इस महंगी लत को पूरा करने के लिए पैसे कहां से लाएगा?

इस सवाल का जवाब ही हमारे मोहल्लों को अपराध की भट्टी में झोंक देता है। जब नशे की तलब चरम पर होती है, तो नैतिकता, लोक-लाज, संस्कार और कानून का डर कपूर की तरह उड़ जाता है। पैसे जुटाने की यह मारामारी उस युवा को एक क्रमिक अपराधी बना देती है।

<u>पहली सीढ़ी -</u> घर से चोरी: शुरुआत हमेशा अपने ही घर से होती है। मां के बटुए से सौ-दो सौ रुपये चुराना, पिता की अलमारी से फुटकर पैसे साफ करना। जब इससे बात नहीं बनती, तो घर की छोटी-मोटी चीजें गायब होने लगती हैं — दीवार घड़ी, पीतल के बर्तन, चांदी के सिक्के, या मां-बहन के छोटे-मोटे गहने। माता-पिता शुरुआत में इसे बच्चे की सामान्य गलती मानकर या समाज में थू-थू होने के डर से छिपा जाते हैं।

दूसरी सीढ़ी - मोहल्ले में चोरी: जब घर की सीमाएं समाप्त हो जाती हैं, तो इस आर्थिक मारामारी का रुख पड़ोसियों की तरफ मुड़ जाता है। रात के अंधेरे में खड़ी गाड़ियों के लॉक तोड़कर पेट्रोल निकालना, घरों के बाहर सूखने के लिए डाले गए महंगे कपड़े या जूते-चप्पल उठा ले जाना, पार्कों और सड़कों पर लगी सरकारी लाइटों के तांबे के तार काट देना।

तीसरी सीढ़ी - हिंसक अपराध: लत का दबाव और ज्यादा बढ़ने पर छोटी-मोटी चोरियों का सिलसिला सीधे सड़क पर होने वाले हिंसक अपराधों में बदल जाता है। राह चलती महिलाओं के गले से सोने की चेन झपट लेना, ट्यूशन से लौटती लड़कियों या अकेले टहलते बुजुर्गों का रास्ता रोककर चाकू की नोंक पर उनका मोबाइल और बटुआ छीन लेना।

अब वह लड़का केवल एक नशेड़ी नहीं रह जाता; वह ऑन-रिकॉर्ड एक खूंखार अपराधी बन चुका होता है। मोहल्ले का आर्थिक ढांचा छिन्न-भिन्न हो जाता है। शाम के सात-आठ बजे के बाद गलियां सूनी होने लगती हैं।

अध्याय 3: अपवित्र गठबंधन - तीन स्तंभों का मायाजाल

इस पूरी कहानी का सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि यह खुली बर्बादी किसी से छुपी हुई नहीं है। यह सब कुछ मुख्य सड़कों पर, व्यस्त चौराहों पर और घनी आबादी वाले मोहल्लों के नुक्कड़ों पर कानून की नाक के ठीक नीचे हो रहा है। मोहल्ले का हर छोटा दुकानदार, स्थानीय पार्षद और बीट कांस्टेबल इस सच से वाकिफ है। वे जानते हैं कि माल किस गाड़ी से आता है, कौन उसे पुड़ियों में बांटता है। इसके बावजूद, यह धंधा फल-फूल रहा है। क्यों?

स्तंभ 1: स्थानीय माफिया - बिजनेस मॉडल
ये वो लोग होते हैं जो सीधे तौर पर ड्रग्स बेचने गलियों में नहीं उतरते। इनका काम होता है सीमाओं के पार से या बड़े शहरों के मुख्य सप्लायरों से थोक भाव में माल मंगवाना। इसके बाद ये मोहल्ले के ही उन लड़कों को निशाना बनाते हैं जो पहले से ही नशे की दलदल में आधे धंस चुके हैं। इन्हें एक शातिर बिजनेस मॉडल के तहत जाल में फंसाया जाता है — "यदि तुम पांच पुड़िया बेचोगे, तो एक पुड़िया तुम्हें मुफ्त मिलेगी।" इस तरह एक उपभोक्ता खुद ही एक सप्लायर बन जाता है। माफिया इन लड़कों को न केवल माल, बल्कि जरूरत पड़ने पर हथियार और कानूनी पचड़ों से बचने का भरोसा भी देता है।

स्तंभ 2: <u>भ्रष्ट पुलिस तंत्र और 'हफ्ता संस्कृति'</u>
किसी भी सभ्य समाज में पुलिस को रक्षक माना जाता है, लेकिन जब रक्षक ही भक्षक के साथ हाथ मिला ले, तो न्याय की उम्मीद दम तोड़ देती है। ड्रग्स के इस काले धंधे में बहने वाला पैसा इतना बेहिसाब होता है कि उसकी चमक के आगे खाकी वर्दी का ईमान फीका पड़ जाता है। स्थानीय थानों, चौकियों तक इस अवैध कमाई का एक निश्चित हिस्सा हर हफ्ते पहुंच जाता है, जिसे 'हफ्ता' या 'महीना' कहा जाता है। यह पैसा अपराधियों को अग्रिम सुरक्षा देने के लिए दिया जाता है।

जब कभी हंगामा होता है, तो यह भ्रष्ट तंत्र एक नौटंकी रचता है। वे मुख्य माफिया को छूते तक नहीं, बल्कि किसी गरीब, लाचार नशेड़ी लड़के को आधी पुड़िया के साथ गिरफ्तार कर लेते हैं। रिकॉर्ड बुक में दिखा दिया जाता है कि 'नशे के खिलाफ बड़ी कार्रवाई' की गई है, जबकि अगले ही दिन उसी नुक्कड़ पर सप्लाई दोबारा शुरू हो जाती है। सबसे खतरनाक बात यह है कि यदि कोई जागरूक नागरिक गुप्त रूप से सूचना देता है, तो कुछ कारिंदे उस सूचनाकर्ता का नाम सीधे ड्रग माफिया तक पहुंचा देते हैं।

स्तंभ 3: <u>राजनीतिक संरक्षण - सबसे मजबूत कवच</u>
लोकतंत्र में जनता नेताओं को इसलिए चुनती है ताकि वे समाज की समस्याओं का समाधान कर सकें, लेकिन नार्को-पॉलिटिक्स के इस दौर में राजनीति खुद ही समस्याओं की जननी बन चुकी है। किसी भी चुनाव को जीतने के लिए आज दो चीजों की सबसे ज्यादा जरूरत होती है: अथाह काला धन और जमीनी स्तर पर मसल्स पावर यानी बाहुबल। ये दोनों चीजें राजनीतिक दलों को इसी ड्रग माफिया के नेटवर्क से मिल जाती हैं।

चुनाव के दौरान रैलियों में भीड़ जुटानी हो, विरोधी दलों के पोस्टरों को फाड़ना हो, वोटरों को डराना-धमकाना हो, या झुग्गी-बस्तियों में शराब, पैसे और ड्रग्स बांटकर वोट बैंक को अपने पक्ष में मोड़ना हो — ये सारे काम यही स्थानीय गुंडे और उनके पीछे चलने वाले नशेड़ी लड़के करते हैं। बदले में, जब वह राजनीतिक दल सत्ता में आता है, तो वह इन गुंडों को एक अभेद्य सुरक्षा कवच प्रदान करता है। अगर कोई ईमानदार पुलिस अधिकारी कार्रवाई करने की कोशिश भी करता है, तो सीधे ऊपर से फोन आ जाता है कि "यह हमारे अपने लड़के हैं, इन पर हाथ मत डालना।" उस अधिकारी का तबादला कर दिया जाता है।

अध्याय 4: एक लत, तीन पीढ़ियों की बर्बादी

जब यह पूरा तंत्र मिलकर काम करता है, तो इसका सबसे पहला और सबसे घातक प्रहार आम आदमी की पर्सनल लाइफ पर होता है। जिस घर का कोई एक भी बच्चा इस दलदल में फंस जाता है, वह घर एक जीता-जागता नर्क बन जाता है।

एक मध्यमवर्गीय पिता, जो अपनी पूरी जिंदगी की कमाई सिर्फ इसलिए कुर्बान कर देता है ताकि उसका बेटा एक अच्छा इंसान बन सके, जब उसे पता चलता है कि उसका इकलौता चिराग गली के नुक्कड़ पर स्मैक की पुड़िया के लिए भीख मांग रहा है, तो उसकी पूरी दुनिया ढह जाती है। समाज ऐसे परिवारों के प्रति सहानुभूति दिखाने के बजाय उन्हें ही कटघरे में खड़ा कर देता है।

इस व्यक्तिगत तबाही का एक आर्थिक पहलू भी है जो बेहद क्रूर है। अपने बच्चे को सुधारने की चाहत में माता-पिता अपनी जिंदगी भर की जमा-पूंजी बहा देते हैं। पहले घर के सोने-चांदी के गहने बिकते हैं, फिर जमीन का टुकड़ा गिरवी रखना पड़ता है। वे उसे महंगे नशा-मुक्ति केंद्रों में भेजते हैं, डॉक्टरों की फीस भरते हैं, और जब वह लड़का चोरी के इल्जाम में पकड़ा जाता है, तो वकीलों और कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटने में कर्ज के दलदल में पूरी तरह डूब जाते हैं।

यदि वह नशेड़ी युवा शादीशुदा है, तो तबाही का दायरा उसकी पत्नी और मासूम बच्चों तक फैल जाता है। नशा न मिलने की सनक में वह अपनी पत्नी के साथ बर्बर मारपीट करता है। ऐसे घरों में पलने वाले बच्चों का बचपन डर, चीख-पुकार और भुखमरी के साये में बीतता है। वे बच्चे मानसिक रूप से इस कदर प्रताड़ित होते हैं कि आगे चलकर उनके भी अपराधी बनने की संभावना सौ गुना बढ़ जाती है।

अध्याय 5: हमारी चुप्पी - अपराधी की सबसे बड़ी ताकत

तो फिर इस चक्रव्यूह के सामने पूरा समाज मूकदर्शक क्यों बना हुआ है? इस सामूहिक चुप्पी के पीछे कोई संवेदनहीनता नहीं, बल्कि एक गहरा मनोवैज्ञानिक डर काम कर रहा है।

आज का आम आदमी कोई सिनेमाई नायक नहीं है। उसकी अपनी एक छोटी सी दुनिया है — सुबह काम पर जाना, आठ घंटे की नौकरी करना, शाम को सब्जी खरीदकर घर लौटना। वह अच्छी तरह जानता है कि यदि उसने इन नशेड़ियों के खिलाफ आवाज उठाई, तो कानून उसकी रक्षा के लिए चौबीस घंटे खड़ा नहीं रहेगा। पुलिस उसे सुरक्षा देने के बजाय अपराधियों को उसका नाम बता देगी। परिणाम यह होगा कि रात के अंधेरे में उसके घर पर पत्थर फेंके जाएंगे, उसकी गाड़ी को आग लगा दी जाएगी।

मनोविज्ञान में इस स्थिति को बायस्टैंडर इफेक्ट कहा जाता है, जहां भीड़ में मौजूद हर व्यक्ति यह सोचता है कि कोई और कदम उठाएगा।

"जब कोई नहीं बोल रहा, तो मैं अकेला क्यों बुरा बनूं?" यही सोच धीरे-धीरे पूरे समाज को नपुंसक बना देती है। अपराधी की ताकत उसकी अपनी ताकत नहीं होती; अपराधी की असली ताकत शरीफों की यह चुप्पी होती है।

अध्याय 6: समाधान - चक्रव्यूह को तोड़ने की रणनीति

1. सामूहिक प्रतिरोध की शुरुआत: अपराधी तभी तक ताकतवर हैं जब तक वे आपसे व्यक्तिगत रूप से निपट रहे हैं। हर कॉलोनी, हर वार्ड में 'स्थानीय नागरिक सतर्कता समितियों' का गठन अनिवार्य किया जाना चाहिए। इन समितियों में सेवानिवृत्त अधिकारी, शिक्षक, महिलाएं और जागरूक युवा शामिल हों। यह समिति सीधे जिले के SP या कमिश्नर के संपर्क में रहे। जब शिकायत एक व्यक्ति के नाम से न जाकर पूरी समिति के हस्ताक्षर के साथ जाएगी, तो अपराधी किसी एक व्यक्ति को निशाना नहीं बना पाएंगे। साथ ही सरकार को ऐसे मोबाइल ऐप्स और हेल्पलाइन जारी करने चाहिए जहाँ शिकायतकर्ता का नाम, IP एड्रेस दर्ज करने का प्रावधान ही न हो।

2. पुलिस तंत्र में जवाबदेही: नो-टॉलरेंस पॉलिसी लागू हो। यदि किसी विशेष इलाके में खुलेआम ड्रग्स की बिक्री पायी जाती है, तो केवल पैडलर को नहीं, उस इलाके के बीट कांस्टेबल, चौकी प्रभारी और थाना प्रभारी को भी सस्पेंड किया जाना चाहिए और उनके खिलाफ अपराधियों को संरक्षण देने का मुकदमा दर्ज होना चाहिए। स्थानीय पुलिस के समानांतर एक स्वतंत्र 'एंटी-नार्कोटिक्स स्पेशल टास्क फोर्स' का गठन होना चाहिए जो सीधे राज्य सरकार को रिपोर्ट करे।

3. पीड़ित का पुनर्वास: जो युवा इस लत का शिकार हो चुके हैं, वे अपराधी नहीं बल्कि इस नार्को-सिस्टम के पीड़ित हैं। उन्हें सिर्फ जेल में ठूंसने से समस्या हल नहीं होगी। हर जिले में मुफ्त, सर्वसुविधायुक्त नशा-मुक्ति एवं मानसिक परामर्श केंद्रों की स्थापना होनी चाहिए। इन केंद्रों में केवल दवाओं से इलाज नहीं, बल्कि योग, ध्यान, काउंसलिंग और सबसे महत्वपूर्ण — कौशल विकास की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए। जब तक उनके हाथों को सम्मानजनक रोजगार नहीं मिलेगा, तब तक वे ठीक होने के बाद दोबारा उसी नुक्कड़ पर लौट जाएंगे।

4. राजनीतिक शुद्धिकरण: जब तक हम चुनाव के समय जाति, धर्म, मुफ्त के प्रलोभनों के आधार पर वोट देते रहेंगे, तब तक हम खुद ही इस भ्रष्ट तंत्र को सहमति दे रहे होते हैं। एक जागरूक मतदाता के रूप में हमें संकल्प लेना होगा कि हम किसी भी ऐसे उम्मीदवार को वोट नहीं देंगे जिसकी पृष्ठभूमि आपराधिक हो।

----- निष्कर्ष: अब फैसला हमें करना है -----

हम आज एक ऐसे नाजुक मोड़ पर खड़े हैं जहां हमारी उदासीनता हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए डेथ वारंट साबित हो सकती है। गली का वह नुक्कड़, जहां आज बारूद, केमिकल और अपराध की गंध है, वह केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं है; वह हमारे समाज के नैतिक पतन का थर्मामीटर है।

यदि आज हमने अपनी खिड़कियां बंद रखीं, यदि आज हमने पुलिस के डर से या माफिया के खौफ से अपने मुंह पर ताला लगाए रखा, तो कल जब यह जहर हमारे अपने बच्चों की नसों में उतरेगा, तब रोने के लिए भी कोई कंधा मयस्सर नहीं होगा।

बदलाव की शुरुआत कभी किसी बड़े आंदोलन से नहीं होती; बदलाव की शुरुआत तब होती है जब एक साधारण इंसान, अपनी तमाम मजबूरियों और डरों के बावजूद, अपनी रीढ़ की हड्डी को सीधा करता है और पहली बार पूरी ताकत से चिल्लाकर कहता है: "बस, अब बहुत हो चुका! अब और नहीं।"

यह लेख उसी सोई हुई सामूहिक चेतना को एक पुकार है। समय रेत की तरह हाथ से फिसल रहा है। विकल्प हमारे सामने साफ हैं — या तो हम इस अपवित्र गठबंधन के सामने आत्मसमर्पण कर दें, या फिर एकजुट होकर इस चक्रव्यूह की एक-एक ईंट बजा दें। फैसला हमें ही करना है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि अंधेरा चाहे कितना भी घना क्यों न हो, वह कभी भी इंसानी संकल्प के सूरज को उगने से नहीं रोक सकता।

– पंकज कुमार

लेखक परिचय

नाम – पंकज कुमार
ग्राम - शिवगंज सिरोही

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.......................**पंकज कुमार**.......................जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।
उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...